

परमात्ममदरसीपुनी ॥ सोममदेशीसाधा ॥ १५ ॥  
 सकलधरमभ्रतुकरमना ॥ नांमिपंथसुराय  
 नेदहमेराहका ॥ सुगटकहुसमजाया ॥ १६ ॥  
 नांमरूपनीरगुणपरे ॥ सकलपंथकेपार ॥ अ  
 वभावतवेहेवारमां ॥ कायंमपंथहमार ॥ १७ ॥  
 कायंमपंथहमारडा ॥ केवलकादेदाग ॥ सत्  
 कुवेरहेआगवा ॥ आवोकीईईयार ॥ १८ ॥ इति  
 श्रीहंसतालैवागंथश्रीमत्परमगुरुमाहारा  
 जश्रीमत्कुवेरस्वामीनोरथहंसतालैवसे  
 पूर्णः ॥ ॥ समाप्तः ॥ ॥ श्रीसद्भुवेनमः ॥  
 ॥ अथसाषीयोलीयेत ॥ अथसुककोअंगः ॥  
 सुधीकोसमकेनही ॥ कथेवाहारसुंज्ञान ॥ अल  
 तोचढेनांअंगने ॥ कुवेरतक्रनेपांन ॥ १ ॥ सुरीन  
 रसुनीजनदेवता ॥ ब्रह्मावीसुमाहेश ॥ केहंकुवे  
 रगोलोकलौ ॥ जेगीतक्रआवेश ॥ २ ॥ षटनवने  
 दशअष्टलौ ॥ चारुवेदचरास ॥ व्यासवलोकण  
 शासनु ॥ पीपतजक्रउपास ॥ ३ ॥ इष्टपदारथजा  
 हांलगे ॥ सुरतपदारथसोय ॥ मंतबुधचीतआ  
 लाचसुं ॥ नीजकारंननहीकोय ॥ ४ ॥ नीजका  
 रंनकेवलकुल ॥ जीवकेअंशजांहांन ॥ पोषंत  
 तेपरहरी ॥ प्राणजीवंनपयेपांन ॥ ५ ॥ रूपवरजं

॥ साध ॥ गमजलथल ॥ अणुप्राये बुंसांड ॥ पुरणप्रेरक  
 वीशुनी ॥ कारणकंदअखंड ॥ ६ ॥ तरुपातीअरण  
 वउदा ॥ उमडतअंगअनंत ॥ तंमनोतंमसाहे  
 रसदा ॥ घटेनहीतरुतंत ॥ ७ ॥ तैसेहीनीजपती  
 ईष्टये ॥ उदभवअंससकल ॥ तरुअरणवसंस  
 अवीधीत ॥ तंमनोतंमकेवल ॥ ८ ॥ सरसुपोषेस  
 रवमां ॥ जौंभाजनमेभांण ॥ बुंसाकीटपतंगलो  
 केहंकुवेराप्राण ॥ ९ ॥ एकहीतंतअनंतनु ॥ पोस  
 णसंचसंचेत ॥ संमसासासउस्वासनी ॥ केहं  
 कुवेरसुणवेत ॥ १० ॥ संमदृष्टेसनमुखसदा ॥ ने  
 नांअगिनाथ ॥ केहंकुवेरसतगुरुवीना ॥ हो  
 यनहीसाक्षात ॥ ११ ॥ सजनमहेसजलअकल  
 में ॥ तामेसकलनीवास ॥ षवेरवीतायालीयसे  
 मीनमरतजलय्यास ॥ १२ ॥ ज्ञानमीनकामघ  
 को ॥ संगकरेजोकोय ॥ केहंकुवेरतोमीले ॥ पी  
 सपीवंतकीतोय ॥ १३ ॥ ज्ञानमीनआंहांसतग  
 रू ॥ जोकोईसरणेजाय ॥ केहंकुवेरकलिदेतही ॥  
 जीवपरंमपदपाय ॥ १४ ॥ चेतनसेवासंतकीज  
 डजलनेपाषाण ॥ यातोपोसउपासना ॥ यातोप  
 तक्षपमांण ॥ १५ ॥ सांईयांसेतीसाहवत ॥ सक  
 लतंततनुतास ॥ केहंकुवेरसतगुरुवीनाहे

॥ १६८

यनहीपरकास॥१६॥गुरुग्यंमन्त्रगंमन्त्रघाट  
 हैं॥जानसकेनहीकोया॥केहंकुवेरगुरुहीलहे  
 केगुरुमीलीयाहोय॥१७॥संमचंद्रवशीएकु  
 करतापणगुरुकीन॥चौदलोकभागेघडेउ  
 रुआग्येआधीन॥१८॥कोहोवशीऐक्यादीया  
 करताकुउपदेश॥एअदेशासरवने॥सुणोकहु  
 संदेश॥१९॥पीत्याबुंदसीरग्रभकी॥जोनलेह  
 जनकोया॥केराजाकेरंकही॥षरअजाण्यादी  
 य॥२०॥एसेकेवलबुंदको॥जीवईश्वरअवतार  
 केहंकुवेरसतगुरुवीना॥कोईलहेनहीपार॥२१  
 जीवईश्वरतीयांहालगे॥ज्यौराजानेरकाकेहं  
 कुवेरकेवलपषे॥ओछुअघकुतटक॥२२॥के  
 वलतानीमहदता॥भंगकालहोयभोम्याकेहं  
 कुवेरदृष्टांतरा॥वारपारनहीओम॥२३॥सुर  
 तनुरतबांतीथकी॥बुध्यसकेनहीबोलकेहं  
 कुवेरकणईये॥नहीपरमांएउपोल॥२४॥नीग  
 मनेतीकोनांकहे॥तत्वभेदनहीत्याग॥केहं  
 कुवेरतत्वातीत॥तांहांसीबोल्याजाग्य॥२५॥चा  
 रवेदचारुलगे॥सुरतनुरतबुध्यवांएय॥केहं  
 कुवेरतेसुलहे॥पुरणपनीरवांएय॥२६॥ए  
 रूलआसेअटपरो॥लटेपटेनहीपार॥केहंकु

सारणी ॥ वेरज्योत्यो करी ॥ सतगुरुहाथवीचार ॥ २७ ॥  
 समजानी समसा समी ॥ अणसंमजे अंधेर  
 ॥ १६६ ॥ तिली बेहे लथकी मरे ॥ दोडगलांके केर ॥ २८ ॥  
 समजण बहु परकारकी ॥ ईशभेद परतीत के  
 हंकुवेर केवल असे ॥ वांणी सकल मंनरीस ॥ २  
 ॥ मंन उपासी कमंन वडे ॥ उपजष पण्यनेले  
 ख ॥ के हंकुवेर अलवेर हो ॥ अवी गत्य आपअ  
 लेख ॥ ३० ॥ जांहां नही जो वा जाल वा सके नां स  
 दसहां न ॥ के हंकुवेर कल वीश्वमे ॥ आपे अ  
 लग घेलां न ॥ ३१ ॥ कल भेदी कायं मवत ॥ मत्तार  
 हीत जे जंन ॥ के हंकुवेर अल गार हो ॥ तांहां सुपी  
 तंन मंन ॥ ३२ ॥ जाकाथा ता कुदीया ॥ लीया दी  
 या ता सोय ॥ कुवेरा अ बरुहा भया ॥ वंदत हे न  
 रलोय ॥ ३३ ॥ मो कुईस मे कपाल ग्या ॥ जीन काजी  
 न कुदीध ॥ बक सति बरधी मली ॥ अनुभव आ  
 त मरीध ॥ ३४ ॥ ताते तुम कु कहतुं ॥ क्वा वंदे म  
 मलोय ॥ हंम जे सी तु मही करे ॥ तो हंम जे से तु  
 म होय ॥ ३५ ॥ ताकी जुक्त वता वुह ॥ सुणो हो सं  
 त सचेत ॥ भीत भीत भेदे करी ॥ जडचे तंन स  
 मित ॥ ३६ ॥ पथंम जड वंदन करू ॥ पंचतत्व नी  
 देह ॥ लघु दी रघने आसरे ॥ तामे नही संदेह

३७। जेथी उत्तपन जेहनी ॥ तितेहेने आधार  
 अलगुकोकेथीनही ॥ अलगसलग एकता  
 रा ३८। सुचरभोमीपररहे ॥ अधरचलेनही  
 कोय ॥ पेचरपीती आसरे ॥ सुहमअवनी होय  
 ३९। अवनीभागअवनी विषे ॥ जलजलनेआ  
 धार ॥ पवंनपवंननेआसरे ॥ सुंत्यतेजयेम  
 धार ॥ ४०। पंचुकी एकताकुहु ॥ जेहीजीनुज  
 नीतसमंध ॥ पेसपयोधरयोक्षण ॥ सुलसुस  
 मनीसंध ॥ ४१। सुधाएकताअवत्यकी ॥ भोज  
 नसेरुचीहोय ॥ सुरती एकतातेजकी ॥ दार  
 दीगंनत्येजोय ॥ ४२। स्वासाएकतापवंनकी  
 अजपातेअहराय ॥ प्यासाएकतातीरकी  
 दारेसुंत्यसराय ॥ ४३। पंचुकीईलमकहीमी  
 लंमकीमलतांत ॥ अगोआपनपोमही ॥ को  
 ईचीनेसंतसहांन ॥ ४४। अगकेआपनायकी  
 जांएषुअनुराग ॥ केहंकुवेरकेहेवायनही ॥  
 तेशख्योगुरुभाग ॥ ४५। आन्येयेसीकहिहती  
 जुक्तवतावुमोय ॥ तोसमजोएहीवीधी ॥ आपा  
 मीटेतोओय ॥ ४६। आपामीटेतोआपहे ॥ सो  
 आपाकषुओर ॥ गयेसुंत्यकेसत्वज्यौ ॥ रहासुं  
 त्यजेगोर ॥ ४७। येसाआपायेनकी ॥ भाष्याबंद

॥ साधी

॥ १७०

समान्य॥ केहें कुवेर करे चाहाय सो॥ स्वयं मरुप  
भगवांत॥ ४८॥ देने का कछु हेन ही॥ लेने का क  
छुहांय॥ अरु पंत तो हेवीन कीया॥ पण गुरुवी  
न सम ऊण न्हंय॥ ४९॥ केवल वेता गुरुमीले  
तो देख सबताय॥ केहें कुवेर कार जघते॥ जीव  
परं म पद पाय॥ ५०॥ तीर गुण की दशवांत जी  
धरी अथे गुण वेश॥ फेरी तीर गुण होय वांगये  
आप आपने सब देश॥ ५१॥ जाघर सेहं म आ  
इया॥ केहेन अंगम की सांन॥ बो होत मात हो  
य पच गये॥ कोहु धरत नही कांन॥ ५२॥ अक  
थक्या मत्य गत्य अती॥ अनभे कीयो उजास  
केहें कुवेर सत गुरुवीना॥ होय नही परकाश  
५३॥ भाष्या मेरी बूझवीदा॥ सांम थवीत कीर  
तार॥ काया कारण सकतु॥ हंमतीनुके पार॥  
५४॥ सुरतह मेरी सुंत्यमे॥ फोटी ईडकटास  
चली गई बिहय पर॥ भेदी बूझवी लास॥ ५५॥ अ  
गंम अगोचर जांहांगम नही॥ ताघर कीयापी  
यांन॥ सत कुवेर वादेशके॥ कोई चेहेने संत  
सहांन॥ ५६॥ इती श्री साधीयो सुरुके अंग सं  
पुराः ॥ समाप्तः ॥